CRAFT FILE

Seema Raikwar

GTS

Bed College

Sagar

कढ़ाई (Embroidery)

कपड़ों पर डिजाइन बनाने की पद्धति जिस कपड़े पर डिजाइन बनाते हैं, उस पर हल्के हाथ से डिजाइन बना लेना चाहिए। कपड़े पर डिजाइन बनाने के लिये बटर पेपर का इस्तेमाल करना चाहिए।

कढ़ाई के प्रकार →
1. साधारण कढ़ाई
2. सजावटी कढ़ाई
3. आभूषणात्मक कढ़ाई

कढ़ाई के उद्देश्य →
1. सौन्दर्यानुभूति
2. समय का सदुपयोग
3. पुराने समय से चली आ रही प्रथा को जीवित रखना।
4. कलात्मक वस्तुओं का निर्माण।

कढ़ाई में प्रयुक्त होने वाली सामग्री →
1. सुई
2. धागा
3. कपड़ा
4. फ्रेम - बिजली का जिगजैग लकड़ी स्टैंडिंग फ्रेम।
5. कार्बन पेपर
6. पेंसिल
7. ट्रेस पेपर
8. कैंची

कपड़े पर कढ़ाई करने से पूर्व ध्यान देने योग्य बातें →
1. सूती कपड़ों को अच्छी तरह धो कर सुखा लेना चाहिए।
2. कपड़े को रिंग पर लगाने से पहले उस पर डिजाइन बना लेना चाहिए।
3. कपड़े पर ज्यादा दबाव नहीं डालना चाहिए।
4. कढ़ाई किये हुये कपड़े पर ज्यादा गर्म प्रेस नहीं करना चाहिए।
5. सुई में 40 इंच से ज्यादा धागा न लें। ज्यादा धागा लेनी से धागा टूट जाएगा।

कढ़ाई की प्रमुख स्टीजे →
1. उल्टी बखिया
2. पराग स्टीज
3. कश्मीरी स्टीज
4. लेजी-डेजी स्टीज
5. काज स्टीज
6. भरवां स्टीज
7. कच्चा टाँका

8. शाटन स्टीज
9. चैन स्टीज
10. इल्ली टाँका
11. बटम होल
12. सीप वर्क
13. मिरर वर्क

कढ़ाई में प्रयुक्त होने वाली सामग्री

1. फ्रेम → कढ़ाई करने के लिए कपड़े को एक फ्रेम में फसाते है जिससे कपड़े में झोल नहीं पड़ता और हमारी कढ़ाई में सफाई आती है यह लकड़ी या प्लास्टिक का गोल रिंग होता है।

2. सुई → कढ़ाई के लिए सुई की आवश्यकता होती है। सुई कई तरह की होती है। मोटे कपड़े के लिए मोटी सुई और पतले कपड़े के लिए पतली सुई की आवश्यकता होती है। अरसी कढ़ाई के लिए सुई अलग होती है।

3. धागा → कढ़ाई के लिए धागा होना आवश्यक है यह धागा रेशम, सादा धागा या अरसी कढ़ाई का धागा होता है।

4. कपड़ा → कढ़ाई के लिए कपड़ा उत्तम प्रकार का होना चाहिए। अन्यथा कपड़ा खिचता हैं और कढ़ाई में सफाई नहीं आती है।

5. पेन्सिल → कढ़ाई करने से पहले कपड़े पर आकृति बनाने के लिए हमें पेन्सिलकी आवश्यकता होती हैं। यह पेन्सिल अच्छे किस्म की होनी चाहिए।

6. कैंची → कढ़ाई करते समय हमें कैंची की भी आवश्यकता होती है। धागे को बार-2 काटने के लिए कैंची की भी बार-2 आवश्यकता होती है।

—o—

"उल्टी बखिया"

यह कढ़ाई बहुत ही सरल है। इसमें सबसे पहले हम एक टाँका डालते हैं फिर जो धागा नीचे रहता है उसे पहले टाँके के अंतिम सिरे से निकालते हैं। यह ऐसी ही प्रक्रिया दोहराते जाते हैं, इस प्रकार जो स्टीज बनती है वह उल्टी बखिया कहलाती है।

कांच वर्क

कपड़े पर पेन्सिल की सहायता से किसी फूल या अन्य आकृति का नमूना बना दिया जाता है और फिर उस पर कांच चिपकाया जाता है या धागे से टाँका लगा दिया जाता है। इस विधि का प्रयोग भी साड़ी, सलवार सूट और बच्चों के कपड़ों पर किया जाता है। कांच को टाँकने के बाद उसके किनारों को धागे से कवर भी किया जा सकता है।

कांच वर्क

उल्टी बखिया

Good
[illegible]

ऊनी जूती

सबसे पहले ऊन का चुनाव किया यदि ऊन पतला है तो पतली सलाई और यदि ऊन मोटा है तो मोटी सलाई उपयोग में लाई जाएगी।

1. सबसे पहले एक सलाई पर 18 फंदे डालें. उसके बाद एक सलाई सीधा फंदा बुन कर कुल 6 सलाई गिन कर बार्डर बना लेंगे।
2. उसके बाद एक सलाई सीधी एक सलाई उल्टी फंदे बिनेंगे और एक इंच बिनाई कर लेंगे।
3. इसके बाद सारे फंदे तीन हिस्सों में बांटेगे और बीच के हिस्से के फंदो पर बिनाई करेंगे।
4. इस हिस्से में उभार देने के लिए सीधे के स्थान पर उल्टी सलाई और उल्टी तरफ सीधी सलाई बिनेंगे।
5. इस प्रकार कुल पाँच-2 सलाई बिनेंगे। फिर दोनों तरफ से फंदे उठाकर इसी प्रकार आठ या नौ सलाई बनाकर फंदे बंद कर देंगे और सिलाई करेंगे मोजा तैयार हो जाएगा।
6. मोजे/~~जूते~~ में यदि लेस लगाना है तो पंजे के ऊपर लेस लगायी जा सकती है।

ऊन का टोपा

~~जूती~~ मोजे के समान ही ऊन और सलाइयों का चुनाव करेंगे।

1. एक सलाई पर पाँच फंदे डालें और प्रत्येक फंदे पर जाली डालकर फंदे बढ़ते जाये आवश्यकतानुसार। अब फंदे बिनते हुए फंदे बढ़ाये और निश्चित फंदो पर जाली डालते जायें।
2. तीन, पाँच या सात जाली बनाई जा सकती है।
3. नीचे की तरफ उभार के लिये सीधे तरफ उल्टी सलाई एवं उल्टे तरफ सीधी सलाई बिनें और चार-पाँच सलाई बिनने के बाद बंद कर दें।
4. टोपे में लेस भी लगाया जा सकता है और बिना लेस के भी पहना जा सकता है।

ऊनी टोपा

ऊनी जूती

फ्राक (Frock)

नाप →

45 c.m. (18) छाती, 40 cm. (160) लंबाई बॉडी के लिये कपड़े की चौड़ाई छाती का आधा अर्थात 6½ c.m. + ½ c.m. सिलाई के लिये 9.cm का दुगुना यानी 18 cm. आगे पीछे की तरफ रखो।

अब कपड़े को पहले चौड़ाई की तरफ से घेर के लिये 90 c.m. चौड़ा और 80 cm. लंबा कपड़ा लेकर दोनों ओर दोहरा करो अब यह 45-45 c.m. चौड़ा और 45 c.m. लंबा कपड़ा रह जायेगा। चौड़ाई और बॉडी का ¼ अर्थात 4 c.m. रखो। घेर की लम्बाई 30 c.m. रखें। कपड़े की बीच वाली जगह में भी 20 c.m. का निशान लगाकर बाकी जो भाग बचे उसको घेर की गोलाई कर दो. इस फ्रॉक को सादा फ्रॉक की बॉडी की तरह ही काट दो और सिल दो। फ्रॉक तैयार हो जायेगी।

फ्राक

Good

फ्राक

पिलो कवर

पिलो कवर बनाने के लिए कपड़े को दोहरा करके पिलो के नाप का काट दिया जाता है पिलो कवर सादा भी बनाया जा सकता है और आकर्षक बनाने के लिए चारों तरफ झालर भी लगाई जा सकती है। कवर के लिए कपड़ा वर्क वाला या सादा दोनों ले सकते है।

रोल पिलो कवर (लोड)

सिम्पल पिलो की तरह ही रोल कवर सिलने के लिए दोहरा कपड़ा रखकर काटा जाता है। इसमें हम दो अलग अलग रंग के कपड़ा का इस्तेमाल कर सकते हैं और दोनों सिरो पर डोरी डाली जाती है।

कुशन कवर

कुशन कवर भी दोहरा कपड़ा रखकर काटा जाता है। कपड़ा वर्क वाला या सादा भी लिया जा सकता है। यदि कपड़ा सादा ले तो सिलाई के बाद उस पर कढ़ाई की जा सकती है और कवर को आकर्षक बनाया जा सकता है।

पिलो कवर

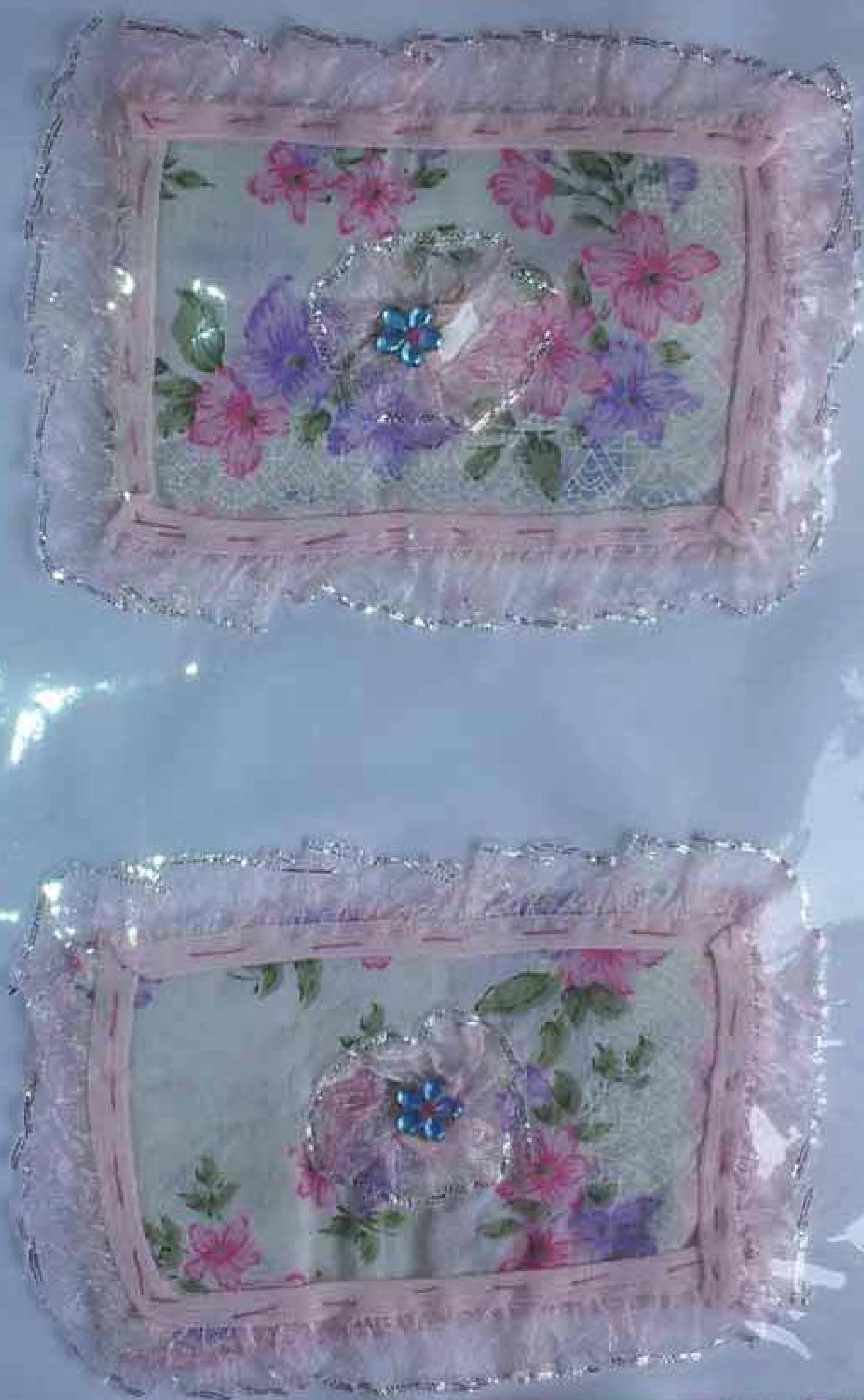

रोल पिलो कवर

कुशन कवर